सादा जीवन उच्च विचार

सादा जीवन उच्च विचार एक सिक्के के दो पहलू हैं। सादा जीवन जीने में जो आनन्द प्राप्त होता है वह बनावटी जीवन जीने में प्राप्त नहीं होता। जिस व्यक्ति का जीवन जितना सादगीपूर्ण होता है उसका जीवन उतना ही सुन्दर होता है। विचारों में उच्चता होनी चाहिए। विधायक भावों से समाज की सेवा करनी चाहिए। हमारे अन्दर विराजमान आत्मा सुख का धाम है। आत्मसाक्षात्कार करने का प्रयास करना चाहिए। मानव जीवनभर चौबीस घण्टे सुख सुविधा प्राप्त करने में व्यस्त रहता है। जीवनभर वह अनेक प्रकार से धन अर्जित करता है। वह धन किस काम का जो हमें आत्मिक सुख न दे सकें। सादा जीवन आत्मसाक्षात्कार में सहायक बनता है। आत्मा अजर अमर है और शरीर नश्वर है। आयुष्य कर्म के क्षीण होने पर शरीर नष्ट हो जाता है। जीवन में सादगी और विचारों में उच्चता होनी चाहिए। पद और प्रतिष्ठा समय के साथ समाप्त हो जाती है।

जीवन में मनुष्य को ऐसा कार्य करना चाहिए कि उसे जीवनभर प्रतिष्ठा की प्राप्ति हो। मानव जब तक किसी पद पर आसीन रहता है तो उसमें अहंकार नहीं होना चाहिए। अहंकार होने से वह समाज से जुड़ नहीं पाता। उसका जीवन एकांगी हो जाता है। पद से हटने के बाद समाज के बीच ही उसे जीवन व्यतीत करना होता है। जितने भी सजीव प्राणी हैं वे सभी अपने कर्म के अनुसार ही जीवन व्यतीत करते हैं। इतने समय में वे जीवन की छाप छोड़ जाते हैं। भगवान राम, भगवान कृष्ण, ईशा मसीह और गुरू नानक जैसे महानुरूषों ने समाज को एक नया मार्ग दिखलाया। जीवन में उन्होंने सत्कर्म किया प्राप्त मन, वचन और काया से किसी भी प्राणी को कष्ट नहीं देना चाहिए। यही उनके जीवन का उद्देश्य था। इसी कारण से समाज उन्हें याद कर रहा है।

सेवा के बहुत से प्रकल्प हैं। सेवा कार्य परार्थ की भावना से ही सम्भव है। सादा जीवन, प्रमादहीन जीवन और अच्छे विचारों के साथ जीवन जीने से शरीर स्वस्थ रहता है। समय और धन का उपयोग परार्थ के लिए होना चाहिए। परार्थ से जीवन में सादगी आती है। सब कुछ त्यागकर समाज सेवा और परार्थ के लिए जीवित रहता है उसका सम्मान सभी जगह होता है।

मनुष्य को सत्य मार्ग दिखलाना चाहिए। मनुष्य को यह सोचना चाहिए कि मानव जीवन कुछ कार्य करने के लिए मिला है। जीवन में जितना समय है यदि उसका अधिकांश भाग समाज सेवा और राष्ट्र निर्माण में लगाया जाये तो राष्ट्र का कल्याण हो सकता है। हमारे देश में उसी का नाम अमर रहा है जिसने देशहित के लिए सब कुछ त्याग कर दिया। जिसके जीवन का उद्देश्य खाओ पीओ और मस्त रहो होता है, वह समाज में आदरणीय नहीं होता। उसे लोग कुछ समय के बाद ही भूल जाते हैं।

सादा जीवन उच्च विचार भारतीय संस्कृति का मूलमंत्र है। यहां के ऋषियों, मुनियों, महर्षियां ने एकान्त में रहकर कन्दमूल फल खाकर नदियों और झरनों का पानी पीकर स्वस्थ तन, मन के द्वारा जो चिन्तन दिया है वह भारतीय साहित्य का आधार स्तम्भ है। महर्षि वेदव्यास, महर्षि वाल्मीकि, भगवान बुद्ध, भगवान महावीर, गोस्वामी तुलसीदास जैसे महापुरुषों ने जो विचार दिये है आज पूरा भारत उसी पर चल रहा है। रामायण, महाभारत, श्रीमद्भागवत्, रामचरितमानस, आगम और त्रिपिटक भारतीय साहित्य की धरोहर हैं। इनमें उच्च विचारों का प्रतिपादन है। जिसका अध्ययन अध्यापन करके भारतीय मनीषा जीवित है। इन महापुरुषों ने राजमहल को त्यागकर साधारण जीवन जीने का निर्णय लिया। इन्होंने संसार के सत्य को खोजा और सामान्य जनता में इसका उपदेश किया। उन्हीं के दिखाये हुए मार्ग पर आज पूरा विश्व चल रहा है।

मानव जीवन को पाकर यदि कोई इसको व्यर्थ में गंवा दे तो उसका जीवन निरर्थक ही रहता है। बड़े भाग्य मानुष तन पावा अर्थात् मनुष्य का शरीर बड़े पुण्य कर्म के पश्चात् ही प्राप्त होता है। मानव जीवन बड़ा ही दुर्लभ है। चौरासी लाख जीवन योनियों में यह सर्वश्रेष्ठ है। मानव एक पंचेन्द्रिय प्राणी है। चेतना का पूर्ण विकास मानव में हुआ है। एक इन्द्रिय वाले जीव, दो इन्द्रिय वाले जीव, तीन इन्द्रिय वाले जीव, चार इन्द्रिय वाले जीव इन्द्रिय विकल कहलाते हैं, क्योंकि संपूर्ण इन्द्रियां इन जीवों में नहीं है। पंचेन्द्रिय प्राणियों में मानव ही सर्वश्रेष्ठ है। पशुओं में भी पांच इन्द्रियां होती हैं किन्तु सोचने विचारने की क्षमता उनमें नहीं होती। मानव और पशु में यही अंतर है कि मानव ज्ञान संपन्न है। इसलिए मानव सर्वश्रेष्ठ है। मानव तन पाकर यदि मानव में मानवता का विकास न हो तो वह पशु से भी वदतर है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर एक दूसरे के सुख–दुःख से प्रभावित होना उसका धर्म है। यही कुछ ऐसी बाते है जो कि मानव को अन्य पंचेन्द्रिय प्राणियों से अलग करती है। मानव का सार है मनुष्यता, जो हर मनुष्य में पायी जाती है। इसे सुरक्षित रखना और सभी प्राणियों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाये रखना मानव का परम कर्त्तव्य है। मानव एक धर्मनिष्ठ प्राणी है। उसे अपने मन को शिव संकल्पों से युक्त करना चाहिए। धर्म इसी आवश्यकता का प्रतिपादन करने के लिए है। मन को सत्यम् से, वाणी को शिवम् से और चरित्र को सुन्दरम् से युक्त करने का उपक्रम है धर्म।